पाठ-योजना तैयार करना

रमेश एस.राठौड़

अगर हम चाहते हैं कि कक्षा में सही मायनों में अधिगम हो तो इसके लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक की तैयारी बहुत अच्छी हो। हम शिक्षकों को यह पता होना चाहिए कि किस तरह की तैयारी करनी है। 'बच्चे को कैसे सिखाया जाए?' इसके बारे में सोचने की बजाय हमें यह सोचना चाहिए कि 'बच्चा कैसे सीखता है?' क्योंकि बच्चा तभी सीखता है जब वह सीखने के लिए तैयार हो। सीखने की कोई सीमा नहीं है, शिक्षा तो एक सतत प्रक्रिया है। अगर स्कूल में सीखना एक चरण है तो जीवन में इसे लागू करना या अपनाना एक अन्य चरण है। बाद में तो जीवन ही हमें कोई-न-कोई सबक़ सिखाता रहता है। स्कूल में बच्चे को हम जो शिक्षा देते हैं वह उसके भावी जीवन की नींव होनी चाहिए और जैसी नींव डाली जाएगी, भावी जीवन उसी के अनुसार विकसित होगा। इसलिए बच्चे को सीखने के लिए तैयार करने के लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक अपनी भूमिका को पूर्व-निर्धारित करें और बच्चों के अधिगम के लिए सही गतिविधियों और संसाधनों का उपयोग करें। इसके लिए शिक्षक को अनेक महत्त्वपूर्ण क़दम उठाने होते हैं जिनमें से एक है उचित पाठ-योजना तैयार करना।

पाठ-योजना तैयार करने से पहले हमें इन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे :

1. बच्चे को क्या सीखना है? (अवधारणा/थीम)
2. बच्चा इस विषय को क्यों सीखे? (उद्देश्य)
3. बच्चा कैसे सीखता है? (गतिविधियाँ)
4. मैं बच्चे के सीखने के स्तर का आकलन कैसे करूँ? (मूल्यांकन)
5. इसमें मेरी क्या भूमिका है?
6. इसमें कौन से संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है?

जब हम यह कहते हैं कि शिक्षक को शिक्षण के दौरान प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना चाहिए तो इसका यह मतलब है कि हमारे लिए केवल शिक्षण में दक्ष होना पर्याप्त नहीं है बल्कि हमें तो उन विद्यार्थियों की ज़रूरतों के प्रति भी बेहद संवेदनशील होना चाहिए जो सीखने में थोड़ा पीछे रह जाते हैं। हममें उन बच्चों को प्रोत्साहित करने की क्षमता होनी चाहिए जो पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं ताकि वे भी अन्य विद्यार्थियों की सीखने की गति से ही सीख पाएँ। इसके अलावा हमें उन्हें पढ़ाने में नवाचारी गतिविधियों और तरीक़ों का उपयोग करने में भी सक्षम होना चाहिए। जो पाठ योजना हम बनाएँ वह ऐसी न हो जो पूरी कक्षा पर समान रूप से लागू होती हो बल्कि ऐसी हो जिसमें प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर और गति का ध्यान रखा गया हो।

मेरा अनुभव

जब मैं तालिकोटे के ब्रिलियंट स्कूल में काम कर रहा था तो मैं कन्नड़ भाषा को व्याख्यान विधि से पढ़ाता, उसके बाद में प्रश्नों के उत्तर बोलकर लिखवा देता और इस तरह पाठ का शिक्षण पूरा कर देता। लेकिन जब मैं अज़ीम प्रेमजी स्कूल में आया तो मैंने सीखा कि बच्चों में चार मुख्य कौशल विकसित करना कितना ज़रूरी है। जब मैंने इन पर काम करना शुरू किया तो मेरे सामने कई समस्याएँ आईं लेकिन साथ ही मैं कई नई बातें भी सीख रहा था जो मुझे इस राह पर चलते रहने के लिए प्रेरित करती रहीं।

बच्चे के सीखने के स्तर के अनुसार शिक्षण

जब मैं एक ऐसी पाठ-योजना लेकर कक्षा में गया जो सभी बच्चों के लिए समान थी तो मुझे कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। कुछ बच्चे बहुत परेशान कर रहे थे और कुछ किसी भी गतिविधि में भाग नहीं ले रहे थे। इस वजह से बाक़ी के विद्यार्थियों को दिक्क़त हो रही थी। जब बच्चों के साथ बातचीत के दौरान यह समस्याएँ सामने आईं तो मुझे एहसास हुआ कि कक्षा में हर बच्चे के सीखने का स्तर अलग था। तब मैंने इस समझ के साथ काम करना शुरू किया कि, पहले इस बात का आकलन करना उचित होगा कि हर बच्चे के सीखने का स्तर क्या है और वे कैसे सीखेंगे। इसके लिए मैंने बच्चों के साथ मिलकर काम किया और पाया कि जब उन्हें उनके सीखने के स्तर के मुताबिक़ अलग-अलग प्रकार के काम दिए गए तो वे पूरी रुचि के साथ उन कामों को कर रहे थे। इस अनुभव से मैंने कई नए विचार सीखे और हमने बच्चों को उनके अधिगम-स्तर और गति के अनुसार सीखने में मदद करने की कोशिश की।

पिछले साल से हमने कन्नड़ भाषा में पढ़ने और लिखने का कौशल सिखाने को उप-चरणों के रूप में लिया और उनके लिए उपयुक्त शिक्षण गतिविधियाँ और वर्कशीट तैयार कीं। उसके बाद हमने बच्चों के सीखने की क्षमता के अनुसार उनका मूल्यांकन किया, उनके सीखने के स्तर की पहचान की और फिर उन्हें उस स्तर से पढ़ाना शुरू किया जिस पर वे थे।

परिणामस्वरूप हमने देखा कि बच्चे लगातार काम में जुटे रहते थे। इस अभ्यास से मैंने भी बहुत कुछ सीखा।

सीखने के चरणों की तैयारी करना

कर्नाटक सरकार द्वारा प्रकाशित *कलिका सामर्थ्यगळा कइपिडी* (सीखने की क्षमताओं की पुस्तिका) और कक्षा एक से छह तक के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों की सहायता से पढ़ने व लिखने के कौशलों के उप-चरणों का निर्माण किया गया।

पढ़ने व लिखने के कौशलों के उप-चरणों का निर्माण करना आसान था लेकिन सुनने व बोलने के कौशलों के चरणों का विकास करते समय कई मुद्दे सामने आए। इन मुद्दों का हल ढूँढ़ने के लिए मैंने अपने सहयोगियों के साथ चर्चा की और उनके दिए सुझावों के अनुसार चरण तैयार किए। लेकिन इन चरणों के बन जाने के बावजूद कक्षा में काम करते समय मुझे कुछ बदलाव करने पड़े।

वर्कशीट के निर्माण में अधिक समय लगा। आगे का रास्ता निर्धारित करने के लिए हर बच्चे को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक गतिविधि को अन्तिम रूप दिया गया। वर्कशीट इस तरह से बनाई गईं जो हमारे उद्देश्यों की पूर्ति करती हों और बच्चों के उपयुक्त और रुचिकर हों ताकि बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी उन्हें हल करें।

शुरू में तो हमने प्रत्येक चरण के लिए एक या दो ही वर्कशीट बनाईं। कक्षा में काम करते समय इन्हें बदला गया और धीरे-धीरे कई और वर्कशीट जोड़ दी गईं।

बच्चों को अधिगम के साथ जोड़ना

अपनी योजना के अनुसार हमने पहले बच्चों के बुनियादी अधिगम-स्तर (बेसलाइन) का मूल्यांकन किया, उसके बाद मैंने चौथी, पाँचवीं और छठी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों का बेसलाइन समझने के लिए चार या पाँच वर्कशीट बनाईं। यह सुनिश्चित किया कि इन वर्कशीट्स में सभी चरणों के मूल्यांकन तत्व शामिल किए जाएँ। इस तरीके का प्रयोग करने से कुछ बच्चों के सीखने का स्तर तो पहली वर्कशीट से ही पता चल गया जबकि कुछ अन्य बच्चों की सारी वर्कशीट और श्रुतलेख देखने पड़े।

जब हमें हर बच्चे का अधिगम-स्तर पता लग गया तब हमने कक्षा में उनके साथ काम किया। कक्षा में कई तरह की गतिविधियाँ की गईं: सामूहिक गतिविधियाँ और प्रत्येक बच्चे के अधिगम स्तर से शुरू होने वाली व्यक्तिगत गतिविधियाँ। जब बच्चों के अधिगम स्तर के उपयुक्त गतिविधियाँ करवाई जाती तो वे तुरन्त दिलचस्पी के साथ काम करने लगते। मैं बच्चों को पहले अवधारणा बताता और फिर उन्हें कुछ अभ्यास करने के लिए देता और अगले बच्चे के पास जाता। बच्चे लगातार अपने काम में जुटे रहते। कुछ बच्चों को बीच में मदद की ज़रूरत पड़ती। इसके लिए बच्चों से अलग-अलग समूहों में और व्यक्तिगत रूप से गतिविधियाँ करवाई गईं और ऐसा करने से बच्चों में दिलचस्पी बढ़ी, वे बड़े उत्साह के साथ इनमें भाग लेने लगे और अधिगम के अच्छे परिणाम भी सामने आए।

कुछ उदाहरण

चौथी कक्षा में *वीरमाते जीजाबाई* पाठ का अपेक्षित उद्देश्य है 'निर्देशों का पालन करते हुए और विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए लिखने की क्षमता प्राप्त करना'। लेकिन सभी विद्यार्थी इस उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाए क्योंकि सबकी क्षमताएँ अलग थीं। हर विद्यार्थी के लिए एक अलग व्यक्तिगत पाठ-योजना और गतिविधियों की ज़रूरत थी। इसलिए हर पाठ की समूह गतिविधियाँ सामूहिक रूप से करवाई गईं, जबकि व्यक्तिगत गतिविधियाँ और वर्कशीट, हर बच्चे की आवश्यकता और उसके स्तर के अनुसार दी गईं।

मैं एक साथ सभी बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान नहीं दे पाता था, अतः मैं कुछ कक्षाओं में उनकी मदद करता। मैंने पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाने/उनका मूल्यांकन करने में पाँचवी कक्षा के बच्चों की मदद भी ली। गतिविधियाँ और मूल्यांकन लगातार चलते रहने चाहिए और रोज़ पाठ पढ़ाने के बाद अपने चिन्तन को दर्ज़ करते रहना चाहिए।

गृहकार्य

इन सब तरीक़ों को अपनाने के बाद भी कुछ बच्चे अपना गृहकार्य नहीं कर रहे थे। तो मुझे लगा कि बच्चों के सीखने के स्तर के उपयुक्त विभिन्न प्रकार का गृहकार्य देना बेहतर होगा। इसलिए मैंने उन्हें वर्कशीट, सारांश कार्य, पठन, अवलोकन, पूछताछ आदि के रूप में गृहकार्य दिए और फिर शनिवार को हम उन पर चर्चा करते। ऐसा करने से लगभग 60%-70% बच्चे समय पर अपना गृहकार्य पूरा करने लगे।

इन परिवर्तनों के लाभ

- बच्चे लगातार काम में लगे रहते।
- प्रत्येक चरण में नए तरीक़े और वर्कशीट होने के कारण बच्चों ने बहुत रुचि के साथ काम किया।
- बच्चों के अधिगम में भी तेज़ी आई क्योंकि बच्चे अपने अधिगम के स्तर पर सीख रहे थे।
- यह बाल-केन्द्रित दृष्टिकोण था जो बच्चों की रुचि से प्रेरित था।
- बच्चों के अधिगम का आकलन और रिकॉर्ड करने में आसानी हुई।
- इसने प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया।
- इससे मुझे निरन्तर सक्रिय रहने के लिए प्रोत्साहन मिला और मैं रोज़ नई बातें सीख रहा हूँ।

इस विधि में मुझे इन मुद्दों का सामना करना पड़ा :

- इसके लिए मुझे अधिक समय की आवश्यकता हुई।
- इसके लिए मुझे अतिरिक्त काम करना पड़ा क्योंकि मुझे स्वयं ही सारी वर्कशीट बनानी थीं।
- कभी-कभी वर्कशीट नियत उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाती थीं।

बच्चों का अधिगम-स्तर

इन चरणों को कक्षा एक से छह की क्षमताओं के लिए बनाया गया है। यह आरोही क्रम में हैं और लगातार बच्चों के अधिगम का आकलन करते हैं जिससे आगे के अधिगम का मार्गदर्शन करने में आसानी होती है। इसके लिए मैंने चार चरण और उप-चरण बनाए हैं व प्रत्येक चरण के लिए गतिविधियाँ निर्धारित की गई हैं।

चरण 1 : लेखन- साफ़ और सुस्पष्ट लेखन

1. सरल शब्द
2. वर्तनी
3. संयुक्त व्यंजन

अ - समान व्यंजन संयोग

ब - भिन्न व्यंजन संयोग

स - मिश्र व्यंजन संयोग

4. वाक्य रचना

   अ - सरल वाक्य निर्माण

   ब - मिश्र वाक्य निर्माण

5. साफ और सुस्पष्ट लेखन
6. व्यवस्थित लेखन
7. सामान्य रूप से प्रयोग किए जाने वाले विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए श्रुतलेख लिखना
8. उचित विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए सुनी या पढ़ी हुई चीज़ों के बारे में सार्थक वाक्य लिखना

चरण 2 : प्रश्नोत्तर लिखना

1. भाषा सीखना
2. श्रुतलेख लिखना
3. मिलान करने का कार्य

चरण 3 : निर्देश के अनुसार लिखना

1. भाषा के नियमों (व्याकरणिक) को समझकर सरल, गतिशील वाक्य लिखना

   (दिए गए डेटा पर)

2. व्यवस्थित लेखन
3. किसी भ्रमण या उत्सव की रिपोर्ट लिखना

ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳ ಮಟ್ಟಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಪಾಠ ಯೋಜನೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಪೀಠಿಕೆ

ಆತ್ಮೀಯರೆ ತರಗತಿಯ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಕಲಿಕೆ ಯಾಗಬೇಕೆಂದರೆ ಮೊದಲು ಶಿಕ್ಷಕರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಉತ್ತಮವಾದ ಸಿದ್ಧತೆಯ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇದೆ. ಶಿಕ್ಷಕರಾದ ನಾವು ಯಾವ ರೀತಿಯ ಸಿದ್ಧತೆ ಬೇಕು ಎಂದುದನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ' ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಹೇಗೆ ಕಲಿಸಬೇಕು ಎಂಬುದನ್ನು ಯೋಚಿಸುವ ಬದಲು ಮಗು ಹೇಗೆ ಕಲಿಯುತ್ತದೆ ' ಎಂಬುದನ್ನು ಯೋಚಿಸುವುದು ಸೂಕ್ತ ಎನಿಸುತ್ತದೆ. ಏಕೆಂದರೆ ಮಗು ತಾನಾಗಿಯೇ ಕಲಿಯಲು ಸಿದ್ಧನಾದಾಗ ಮಾತ್ರ ಕಲಿಯುತ್ತದೆ.ಕಲಿಯುವಿಕೆ ಕೊನೆಯಿಲ್ಲ. ಶಿಕ್ಷಣವೆಂಬುದು ನಿರಂತರವಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆ. ಶಾಲಾ ಕಲಿಕೆಯು ಒಂದು ಘಟ್ಟವಾದರೆ ಅದನ್ನು ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೋಳ್ಳುವುದು ಮತ್ತೊಂದು ಘಟ್ಟವಾಗಿದೆ. ನಂತರ ಜೀವನವು ಒಂದಲ್ಲ ಒಂದು ರೀತಿಯ ಪಾಠ ಕಲಿಸುತ್ತಲೇ ಇರುತ್ತದೆ. ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ನಾವು ಕೊಡುವುದು ಶಿಕ್ಷಣ ಮುಂದಿನ ಜೀವನದ ಬುನಾದಿಯಾಗುರಬೇಕು. ಈ ಬುನಾದಿ ಯಾವ ರೀತಿಯಾಗಿ ಇರುತ್ತದೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಅವನ ಜೀವನ ಬೆಳೆಯುತ್ತದೆ. ಹೀಗಿರುವಾಗ ಅವನನ್ನು ಕಲಿಯಲು ಸಿದ್ಧಗೋಳಿಸುವಲ್ಲಿ ನಮ್ಮ ಪಾತ್ರವೇನು ಹಾಗೂ ನಾವು ಯಾವ ರೀತಿಯ ಚಟುವಟಿಕೆ, ಸಂಪನ್ಮೂಲಗಳನ್ನು ಬಳಸಬಹುದು ಎಂಬುದನ್ನು ಮೊದಲೇ ನಿರ್ಧಾರ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದೆ ಪಾಠ ತಯಾರಿಯಾಗಿರುತ್ತದೆ.

ಪಾಠ ತಯಾರಿಕೆಯನ್ನು ಮಾಡುವ ಮೊದಲು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಈ ಕೆಳಗಿನ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರ ಇರುವುದು ಸೂಕ್ತ .

1. ಮಗು ಏನು ಕಲಿಯಬೇಕು ? (ಪರಿಕಲ್ಪನೇ/ ವಿಷಯಾಂಷ)
2. ಈ ವಿಷಯ ಏಕೆ ಕಲಿಯಬೇಕು ? (ಉದ್ದೇಶ)
3. ಮಗು ಹೇಗೆ ಕಲಿಯುತ್ತದೆ ? (ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು)
4. ಮಗುವಿನ ಕಲಿಕೆ ನನಗೆ ಹೇಗೆ ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ ? (ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ)
5. ಅದರಲ್ಲಿ ನನ್ನ ಪಾತ್ರವೇನು ?
6. ಯಾವ ಯಾವ ಸಂಪನ್ಮೂಲಗಳನ್ನು ಬಳಸಬಹುದು ?

ಬೋಧನೆಯಲ್ಲಿ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಕರು ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ವಿದಾರ್ಥಿಗೂ ವೈಯಕ್ತಿಕ ನಿಗಾ ಕೊಡುಬೇಕು ಎನ್ನುವುದುದಾದ ಶಿಕ್ಷರಾದ ನಾವು ಪರಿಣಿತರಷ್ಟೆ ಆಗಿದ್ದರೆ ಸಾಲದು ಮಕ್ಕಳು ಕಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಹಿಂದೆಬಿದ್ದಿರುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಸೂಕ್ಷ್ಮಸಂವೇದನಾಶೀಲರಾಗಿರಬೇಕು. ಕಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಹಿಂದುಳಿದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳನ್ನು ಇತರೆ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ಸಮನಾಗಿ ಕಲಿಯುವಂತೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವುದು ನವೀನ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು, ವಿಧಾನಗಳು ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಸಾಮರ್ಥವನ್ನು ಹೊಂದಿರಬೇಕು ಮತ್ತು ಪಾಠ ತಯಾರಿಕೆಯು ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಇರದೆ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಮಕ್ಕಳ ಮಟ್ಟಕ್ಕನುಗುಣವಾಗಿ ಇರುವುದು ಸೂಕ್ತ.

ನನ್ನ ಅನುಭವ

ನನ್ನ ಅನುಭವವನ್ನು ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳುವದಾದರೆ ನಾನು ಮೊದಲು ಬ್ರಿಲಿಯಂಟ್ ಸ್ಕೂಲ್ ತಾಳಿಕೋಟನಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಕನ್ನಡ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಉಪನ್ಯಾಸ ವಿಧಾನದ ಮೂಲಕ ಪಾಠಮಾಡಿ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರ ಬರೆಸಿ ಪಾಠ ಮುಗಿಸುತ್ತಿದ್ದೆ. ಆದರೆ ನಾನು ಅಜೀಮ್ ಪ್ರೇಮಜಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಬಂದಾಗ ಇಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಕನ್ನಢದ ಪ್ರಮುಖವಾದ 4 ಕೌಶಲ್ಯವನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಮಾಡಲು ಕೆಲಸಮಾಡಿಸುವುದು ಸೂಕ್ತವೇಂದು ತಿಳಿದುಕೊಂಡೆ. ನಂತರ ಅದರ ಮೇಲೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದಾಗ,ನನಗೆ ಹಲವಾರು ರೀತಿಯ ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ಬಂದವು, ಜೊತೆಗೆ ಹೋಸ-ಹೋಸ ವಿಷಯಗಳ ಕಲಿಕೆ ಕೂಡಾ ಆಗುತ್ತಾ ಇತ್ತು. ಇದರಿಂದ ಕೆಲಸ ಮಾಡಲು ಪ್ರೇರಣೆ ದೊರೆಯತ್ತಿತ್ತು.

ಮಕ್ಕಳ ಮಟ್ಟದಿಂದ ಕಲಿಕೆ

ನನ್ನ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಒಂದೆ ರೀತಿಯ ಯೋಜನೆಯೊಂದಿಗೆ ನಾನು ತರಗತಿಗೆ ಹೋದಾಗ ನನಗೆ ಹಲಾವಾರು ರೀತಿಯ ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ಎದುರಾಗತಿತ್ತು.ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳು ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ತುಂಬಾ ತೊಂದರೆ ಮಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಇನ್ನೂ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳು ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಚಟುವಟಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೋಡಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಇದರಿಂದ ತರಗತಿಯ ಉಳಿದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತೊಂದರೆ ಯಾಗುತ್ತಿತು. ಈ ರೀತಿಯ ಸಮಸ್ಯೆಯನ್ನು ಸಹಪಾಠಿಗಳ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಚರ್ಚೆ ಮಾತುಕತೆಯ ಮೂಲಕ ತಿಳಿದುಬಂದಿದ್ದು, ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕಾ ಮಟ್ಟವು ಬೇರೆ-ಬೇರೆ ಯಾಗಿರುತ್ತದೆ ಅವರ ಕಲಿಕಾ ಮಟ್ಟ ಮತ್ತು ಅವರು ಹೇಗೆ ಕಲಿಯಬಹುದು ಎಂದು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವು ಸೂಕ್ತವೆಂದು ತಿಳಿದು ಕೆಲಸ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದೆನು. ಇದಕ್ಕಾಗಿ ನಾನು ಮೊದಲು ಮಕ್ಕಳ ಜೋತೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ದಿನಗಳ ಕಾಲ ಅವರಿಗೆ ಬೇರೆ-ಬೇರೆ ಕೆಲಸವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಾಗ ಅವರು ತುಂಬಾ ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದು, ಕಂಡುಬಂತು. ಇದರಿಂದ ನನಗೆ ತಿಳಿದು ಬಂತು.

ಕಲಿಕೆ ಹಂತನ್ನು ತಯಾರಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ

ನಾನು ಕನ್ನಡ ಭಾಷಾ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಓದುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬರವಣಿಗೆಯ ಕೌಶಲಗಳಲ್ಲಿಯ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಉಪ ಹಂತಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡೆ ಇದಕ್ಕಾಗಿ 'ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರದ ಕಲಿಕಾ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳ ಕೈಪಿಡಿ', 'ಅಜೀಮ್ ಪ್ರೇಮ್‌ಜಿ ಶಾಲೆಗಳ ಕಲಿಕಾ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳು'. ಮತ್ತು 1 ರಿಂದ 6ನೇ ತರಗತಿ ಪಠ್ಯ ಪುಸ್ತಕವನ್ನು ಓದಿ ಹಂತಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಂಡೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಓದುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬರವಣಿಗೆ ಕೌಶಲ್ಯವನ್ನು ಸರಳವಾಗಿ ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲಾಯಿತು ಆದರೆ ಆಲಿಸುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಮಾತುನಾಡುವಿಕೆಯ ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಹಲವಾರು ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ಬಂದವು. ಅವುಗಳನ್ನು ನಿವಾರಿಸಲು ಸಹಪಾಠಗಳ ಜೊತೆಯಲಿ ಮಾತುಕತೆಯ ನಂತರ ಅವರ ಸಲಹೆಯಂತೆ ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಲಾಯಿತು. ನಾನು ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದ ನಂತರವು ಸಹ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪಮಟ್ಟಿಗೆ ಬದಲಾವಣೆಗಳು ಕೂಡಾ ಆದವು.

ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳ ತಯಾರಿಕೆ

ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಹೆಚ್ಚು ಸಮಯಬೇಕಾಯಿತು. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಹಂತವು ಸಾಗುವ ರೀತಿ ನಿರ್ಧಾರವಾಗಲು ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇದೆ. ಅವುಗಳು ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಮಗುವನ್ನು ಗಮನದಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ನಿರ್ಧರಿಸುವುದು ಮತ್ತು ಅವು ನಾನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ ಉದ್ದೇಶವನ್ನು ಇದರಿಂದ ಎಷ್ಟರಮಟ್ಟಿಗೆ ಇಡೆರಬಹುದು ಎಂಬುದನ್ನು ಗಮನದಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಇದನ್ನು ಸುಲಭವಾಗಿ , ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡುವಂತಹ ಅಭ್ಯಾಸಹಾಳೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಲಾಗಿತ್ತು.

ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಹಂತದಲ್ಲಿ 1–2 ಅಬ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗಿತ್ತು ನಂತರ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಮತ್ತೆ ಬದಲಾವಣೆಯಾದವು ಹಾಗೂ ಬೇರೆ–ಬೇರೆ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳು ಸಹ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಲೆ ಇವೆ.

ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮೋದಲು ನಮ್ಮ ಯೋಜನೆಯ ಪ್ರಕಾರ ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕಾ ಹಂತ (ಬೆಸಲೈನ್) ತಿಳಿಯಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಲಾಯಿತು, ನಂತರ ನಾನು 4,5,ಮತ್ತು6ನೇ ತರಗತಿಯ ಮಕ್ಕಳ ಬೆಸಲೈನ್‌ನನ್ನು ತೀಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು 4ರಿಂದ5 ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯನ್ನು ಮಾಡಿದೆ, ಅದರಲ್ಲಿ 1ನೇ ಹಂತದಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ಹಂತದ ಮೌಲ್ಯಮಾಪನದ ಅಂಶಗಳು ಒಳಗೊಂಡಿರುವಂತೆ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳವಾಗಿತ್ತು. ಇದರಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳ ಹಂತ 1ನೇ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯಿಂದ ತಿಳಿಯಿತು ಆದರೆ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ ಎಲ್ಲಾ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆ, ಉಕ್ತಲೇಖನಗಳನ್ನು ನೋಡಬೇಕಾಯಿತು.ಇದಾದ ನಂತರ ಮಕ್ಕಳ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಲಾಯಿತು, ಅಲ್ಲಿಯೂ ಸಹ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳ ಹಂತ ಬದಲಾಯಿತು.

ಮಕ್ಕಳ ಹಂತವನ್ನು ತಿಳಿದನಂತರ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಲಾಯಿತು, ತರಗತಿಯಲ್ಲಿಯ ಸಾಮೂಹಿಕ ಮತ್ತು ವೈಯಕ್ತಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು ಯಾವುವು ಎಂದು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಸಾಮೋಹಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಸಾಮೋಹಿಕವಾಗಿಯೇ ಮಾಡಿ, ವೈಯಕ್ತಕ ಚಟುವಟಿಕೆ ಮ್ಕ್ಕ ಹಂತದಿಂದ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತಮ್ಮ ಹಂತದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಕೊಟ್ಟ ತಕ್ಷಣ ತುಂಬಾ ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು, ಮೊದಲು ನಾನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಯನ್ನು ಪರಿಚಯಮಾಡಿ ನಂತರ ಅವರಿಗೆ ಅಭ್ಯಾಸ ನೀಡಿ ಮುಂದಿನ ಮಗುವಿನ ಬಳಿ ಹೋಗುತ್ತಿದೆ. ಮಕ್ಕಳು ನಿರಂತರವಾಗಿ ತಮ್ಮ–ತಮ್ಮ ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುತ್ತಿದ್ದರು. ಮದ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳು ಸಹಾಯ ಬಯಸುತ್ತಿದ್ದರು ಅವರಿಗೂ ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತ ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು.

ಇದರಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳ ಆಸಕ್ತಿಯನ್ನು ಕೆರಳಿಸುವಂತಹ ಬೇರೆ–ಬೇರೆ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ವೈಯಕ್ತಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದು ನಡೆಯುತ್ತಿರುತ್ತದೆ. ಇದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳ ತುಂಬಾ ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಭಾಗವಹಿಸುವಿಕೆ ಕಂಡುಬರುತ್ತಿತ್ತು ಹಾಗೂ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಇದಕಿಂತ ಭಿನ್ನವಾದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಕೂಡಾ ಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಮಕ್ಕಳು ಕೆಲಸ ಮಾಡಿದ ನಂತರ ಹೊರಬರುವ ಕಲಿಕೆಕೂಡಾ ಉತ್ತಮವಾಗಿರುತ್ತದೆ.

ಉದಾ:

4ನೇ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ "ವೀರಮಾತೆ ಜೀಜಾಬಾಯಿ" ಪಾಠದ ಉದ್ದೇಶ ಬಂದು 'ಸೂಚನೆಗಳನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಲೇಖನ ಚಿಹ್ನೆ ಸಹಿತ ಬರೆಯುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಹೊಂದುವುದು' ಇದೆ ಅದನ್ನು ತರಗತಿಯ ಎಲ್ಲಾ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಧಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ, ಏಕೆಂದರೆ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಒಂದೆ ಇರುವುದಿಲ್ಲಾ. ಆದ ಕಾರಣ ಪ್ರತಿ ಮಕ್ಕಳ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಯೋಜನೆ ಮತ್ತು ಚಟುವಟಿಕೆಗಳ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇದೆ.

ಇದನ್ನು ನಾನು ಆಯಾ ಪಾಠದಲ್ಲಿಯ ಸಾಮೋಹಿಕ ಚಟುಚಟಿಕೆಯನ್ನು ಒಟ್ಟಾರೆಯಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದು, ವೈಯಕ್ತಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಾಸ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಅವರವರ ಹಂತದಿಂದ ಮಾಡುತ್ತನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಅವದಿಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳ ಕಡೆ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಗಮನಹರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದಿಲ್ಲಾ ಆಗ ನಾನು ಒಂದು ಅವಧಿಗೆ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಮತ್ತು 5ನೇ ಗುಂಪಿನ ಮಕ್ಕಳ ಸಹಾಯ ಪಡೆದು ಒಂದನೇ ಗುಂಪಿನ ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆ / ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ಮಾಡಿಸುವದು. ಇದು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಚಟುವಟಿಕೆ ಮತ್ತು ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ನಡೆಯಬೇಕು. ಹಾಗೂ ಪಾಠದ ನಂತರ ಪ್ರತಿದಿನವು ರಿಫ್ಲ್ಯಾಕ್ಷನ್ ಬರೆದರೆ ಉತ್ತಮ.

ಮನೆ ಕೆಲಸ

ಈ ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ರೀತಿಯ ವಿಧಾನವನ್ನು ಬಳಸಿದರೂ ಸಹ ಮಕ್ಕಳು ಮನೆಗೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತರಲಿಲ್ಲಾ, ಆಗ ನಾನು ಮಕ್ಕಳು ಮನೆಗೆಲಸ ಮಾಡದಿರಲು ಕಾರಣ ಹುಡಕಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದೆ. ಆಗ ನನಗೆ ತಿಳಿದು ಬಂದಿದ್ದು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಮನೆಗೆಲಸವನ್ನು ವಿಭಿನ್ನ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನೀಡುವುದು ಮತ್ತು ಅವರ ಹಂತದ ಕೆಲಸ ನೀಡುವುದು.ಹಾಗೂ ಅವು ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆ, ಸಂಗ್ರಹ, ಓದು, ವಿಕ್ಷಣೆ.ವಿಚಾರಣೆ ಇತ್ಯಾದಿ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ನೀಡುವುದು, ಮತ್ತು ಅದರ ಕುರಿತು ಪ್ರತಿ ಶನಿವಾರ ಚರ್ಚೆಯನ್ನು ಮಾಡಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಸುಮಾರು 60%–70% ಮಕ್ಕಳು ಪ್ರತಿ ನಿತ್ಯ ಮನೆಗೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

ನನಗೆ ಈ ವಿಧಾನದಿಂದಾದ ಅನೂಕುಲ ಮತ್ತು ಸಮಸ್ಯೆಗಳು.

ಈ ವಿಧಾನದಿಂದಾದ ಅನೂಕುಲಗಳು

- ಮಕ್ಕಳು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಿಕೆ ಕಂಡು ಬಂತು.
- ಪ್ರತಿ ಹಂತಕ್ಕೂ ಹೊಸ–ಹೊಸ ರೀತಿಯ ವಿಧಾನ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳು ಇರುವುದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳ ಆಸಕ್ತಿಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವಂತೆ ಅನೂಕೂಲವಾಯಿತು.
- ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕಾ ಮಟ್ಟದ ಕಲಿಕೆ ಇರುವುದರಿಂದ ಕಲಿಕೆಯು ಸ್ವಲ್ಪ ಮಟ್ಟದಲ್ಲಿ ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು ಕಂಡು ಬಂತು.
- ಇದು ಮಗು ಕೇಂದ್ರಿತ ಪದ್ಧತಿಯಾಗಿದ್ದು, ಮಗುವಿನ ಆಸಕ್ತಿಯಂತೆ ಕಲಿಕೆಯಾಗುತ್ತಿದೆ ಎಂದು ತಿಳಿದು ಬಂತು.
- ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯನ್ನು ಸುಲಭವಾಗಿ ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ಮತ್ತು ದಾಖಲೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಅನೂಕೂಲ ವಾಗುತ್ತಿದೆ.
- ಪ್ರತಿ ಮಗುವಿಗೂ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಗಮನಕೊಡುವಂತೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುತ್ತಿದೆ.
- ನಾನು ಸದಾ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲರನಾಗಿ ಇರಲು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುತ್ತಿದೆ ಹಾಗೂ ಪ್ರತಿದಿನವು ಹೊಸ–ಹೊಸ ವಿಷಯವನ್ನು ಕಲಿಸುತ್ತಿದೆ.

ಈ ವಿಧಾನದಿಂದಾದ ಸಮಸ್ಯೆಗಳು

- ಇಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಮಯದ ಬೇಕಾಯಿತು.
- ಇಲ್ಲಿ ನಾನು ಎಲ್ಲಾ ವಿಧಾನದ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳನ್ನು ಸಿದ್ಧಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾಗಿದ್ದರಿಂದ ಇದು ಹೊರೆ ಅನಿಸಿತು.
- ನಾನು ತಯಾರಿಸಿದ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯಲ್ಲಿ ಉದ್ದೇಶ ಪೂರ್ತಿಯಾಗದೆ ಹೋಗಬಹುದು ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಕಾರ್ಯದ ಅವಶ್ಯಕ ಇದೆ.

ನನ್ನದೊಂದು ಯೋಜನೆ.

ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯ ಹಂತಗಳು

ಈ ಹಂತಗಳನ್ನು 1–6ನೇ ತರಗತಿಯ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳು ಒಳಗೊಳ್ಳುವಂತೆ ರಚಿಸಲಾಗಿದೆ.ಇವುಗಳು ಏರಿಕೆ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿದ್ದು, ಮಗುವಿನ ಕಲಿಕೆಯನ್ನು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ಮಾಡಿ ಮುಂದಿನ ಕಲಿಕೆಗೆ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ಮಾಡಲು ಸುಲಭವಾಗುತ್ತದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ನಾಣು ಒಟ್ಟಾರೆಯಾಗಿ 4 ಹಂತಗಳು ಮತ್ತು ಉಪ ಹಂತಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿದ್ದು, ಪ್ರತಿಯೊಂದಕ್ಕೂ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳನ್ನು ನಿರ್ಧರಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಬರವಣಿಗೆ

ಹಂತ : 1 ಸ್ಪಷ್ಟ ಮತ್ತು ಶುದ್ಧಬರಹ

1. ಸರಳ ಪದ
2. ಕಾಗುಣಿತ
3. ಒತ್ತಾಕ್ಷರ
   1. ಸಜಾತಿ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ
   2. ವಿಜಾತಿ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ
   3. ಮಿಶ್ರ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ
4. ವಾಕ್ಯರಚನೆ
   1. ಸರಳ ವಾಕ್ಯರಚನೆ
   2. ಸಂಯುಕ್ತ ವಾಕ್ಯರಚನೆ
5. ಅಚ್ಚುಕಟ್ಟಾಗಿ ಮತ್ತು ಸ್ಪುಟವಾಗಿ ಬರೆಯುವುದು.
6. ಕ್ರಮಬದ್ಧವಾಗಿ ಬರೆಯುವುದು.
7. ಉಕ್ತಲೇಖನದ ಮೂಲಕ ಹೆಚ್ಚು ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿರುವ ಲೇಖನ ಚಿಹ್ನೆಗಳನ್ನು ಬಳಸಿ ಬರೆಯುವುದು
8. ಆಲಿಸಿದ ಮತ್ತು ಓದಿದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸೂಕ್ತ ಲೇಖನಚಿಹ್ನೆಗಳನ್ನು ಬಳಸಿ ಅರ್ಥಪೂರ್ಣ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವುದು.

ಹಂತ : 2 ಪ್ರಶ್ನೆ ಉತ್ತರ ಬರವಣಿಗೆ

1. ಭಾಷಾಬ್ಯಾಸ
2. ಉಕ್ತಲೇಖನ
3. ಹೊಂದಿಸಿ ಬರೆಯಿರಿ

ಹಂತ : 3 ನಿರ್ದೇಸಿತ ಬರವಣಿಗೆ

1. ಸರಳ ಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕ, ಸಾಂರ್ಭಿಕ ಭಾಷಾಂಶ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಅರ್ಥ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ವಾಕ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವುದು ದತ್ತಕಾರ್ಯ
2. ಕ್ರಮಬದ್ಧ ಬರವಣಿಗೆ
3. ಹೊರಸಂಚಾರ, ಆಚರಣೆಗಳ ವರಧಿ ಬರವಣಿಗೆ
4. ಪದಪುಂಜ,ನುಡಿಗಟ್ಟು,ಮತ್ತು ಗಾದೆ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಸ್ವಂತ ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಳಸುವುದು.

ಹಂತ : 4 ಸ್ವತ: ಬರವಣಿಗೆ/ ಸೃಜನಾತ್ಮಕ ಬರವಣಿಗೆ

1. ಅನೌಪಚಾರಿಕ ಪತ್ರ , ಕುಶಲೋಪಚಾರಿ ಪತ್ರಗಳು, ಪ್ರವಾಸಲೇಖನಗಳು ಮತ್ತು ಚಿಕ್ಕ ಪ್ರಬಂಧಗಳನ್ನು ಸ್ವತಂತ್ರವಾಗಿ ಬರೆಯುವುದು.
2. ಪಾಠದಲ್ಲಿ ಬರುವ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಕಥೆ,ಸಂಭಾಷಣೆ, ಸಾರಂಶ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವುದು.
3. ನಮ್ಮ ಪುಸ್ತಕ
4. ಕಿರು ಟಿಪ್ಪಣಿ
5. ಸ್ವತ: ಕಥೆಬರವಣಿಗೆ
6. ಪದ್ಯ ಬರವಣಿಗೆ
7. ಚಿತ್ರನೋಡಿ ಬರವಣಿಗೆ
8. ಆಡುಭಾಷೆಯಿಂದ ಗ್ರಾಂಥಿಕಭಾಷೆಗೆ ವರ್ಗಾವಣೆ

ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು , ಅದಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಅಭ್ಯಾಸ ಚಟುವಟಿಕೆ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಹಲವಾರು ರೀತಿಯ ಕಲಿಕೆ ಮತ್ತು ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ನನಗಾಯಿತು. ಅದನ್ನು ಆಧಾರವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮುಂದಿನ ಯೋಜನೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಯಿತು.

4. अपने वाक्यों में मुहावरे, पदबन्धों और कहावतों का प्रयोग करना

चरण 4 : स्वलेखन/रचनात्मक लेखन

1. स्वतंत्र रूप से अनौपचारिक पत्र, औपचारिक पत्र, यात्रा वृत्तान्त और लघु निबन्ध लेखन
2. पाठ में वर्णित बातों को कहानी, संवाद या सारांश के रूप में लिखना
3. हमारी पुस्तक
4. लघु नोट
5. स्वतंत्र रूप से कहानी लेखन
6. कविताएँ लिखना
7. चित्र देखकर उसके बारे में लिखना
8. बोलचाल की भाषा को लिखित भाषा में परिवर्तित करना

इन चरणों का अनुसरण करने के बाद और गतिविधियों पर आधारित अभ्यास और वर्कशीट बनाने के बाद मैंने अपनी कक्षा में बहुत सारी बातें सीखीं। यहाँ तक कि समस्याओं से भी मैंने बहुत कुछ सीखा। मैंने अपनी अगली पाठ योजनाएँ इन्हीं अनुभवों के आधार पर बनाई।

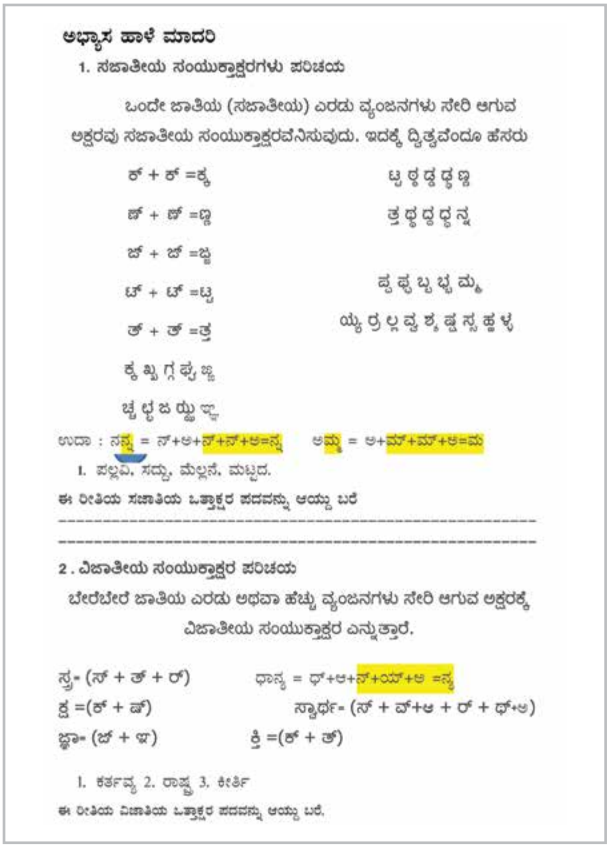

ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆ ಮಾದರಿ

1. ಸಜಾತೀಯ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರಗಳು ಪರಿಚಯ

ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ (ಸಜಾತೀಯ) ಎರಡು ವ್ಯಂಜನಗಳು ಸೇರಿ ಆಗುವ ಅಕ್ಷರವು ಸಜಾತೀಯ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರವೆನಿಸುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ದ್ವಿತ್ವವೆಂದೂ ಹೆಸರು

ಕ್ + ಕ್ =ಕ್ಕ   ಟ್ಟ ಠ್ಠ ಡ್ಡ ಢ್ಢ ಣ್ಣ

ಙ್ + ಙ್ =ಙ್ಙ   ತ್ತ ಥ್ಥ ದ್ದ ಧ್ಧ ನ್ನ

ಜ್ + ಜ್ =ಜ್ಜ

ಟ್ + ಟ್ =ಟ್ಟ   ಪ್ಪ ಫ್ಫ ಬ್ಬ ಭ್ಭ ಮ್ಮ

ತ್ + ತ್ =ತ್ತ   ಯ್ಯ ರ್ರ ಲ್ಲ ವ್ವ ಶ್ಶ ಷ್ಷ ಸ್ಸ ಹ್ಹ ಳ್ಳ

ಕ್ಕ ಖ್ಖ ಗ್ಗ ಘ್ಘ ಙ್ಙ

ಚ್ಚ ಛ್ಛ ಜ ಝ್ಝ ಞ್ಞ

ಉದಾ : ನನ್ನ = ನ್+ಅ+ನ್+ನ್+ಅ=ನ್ನ   ಅಮ್ಮ = ಅ+ಮ್+ಮ್+ಅ=ಮ

1. ಪಲ್ಲವಿ, ಸದ್ದು, ಮೆಲ್ಲನೆ, ಮಟ್ಟದ.

ಈ ರೀತಿಯ ಸಜಾತಿಯ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ ಪದವನ್ನು ಆಯ್ದು ಬರೆ

2 . ವಿಜಾತೀಯ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರ ಪರಿಚಯ

ಬೇರೆಬೇರೆ ಜಾತಿಯ ಎರಡು ಅಥವಾ ಹೆಚ್ಚು ವ್ಯಂಜನಗಳು ಸೇರಿ ಆಗುವ ಅಕ್ಷರಕ್ಕೆ ವಿಜಾತೀಯ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರ ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ.

ಸ್ತ್ರ- (ಸ್ + ತ್ + ರ್)   ಧಾನ್ಯ = ಧ್+ಅ+ನ್+ಯ್+ಅ =ನ್ಯ

ಕ್ಷ =(ಕ್ + ಷ್)   ಸ್ವಾರ್ಥ- (ಸ್ + ವ್+ಆ + ರ್ + ಥ್+ಅ)

ಜ್ಞಾ- (ಜ್ + ಞ)   ಕ್ತಿ =(ಕ್ + ತ್)

1. ಕರ್ತವ್ಯ 2. ರಾಷ್ಟ್ರ 3. ಕೀರ್ತಿ

ಈ ರೀತಿಯ ವಿಜಾತಿಯ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ ಪದವನ್ನು ಆಯ್ದು ಬರೆ.

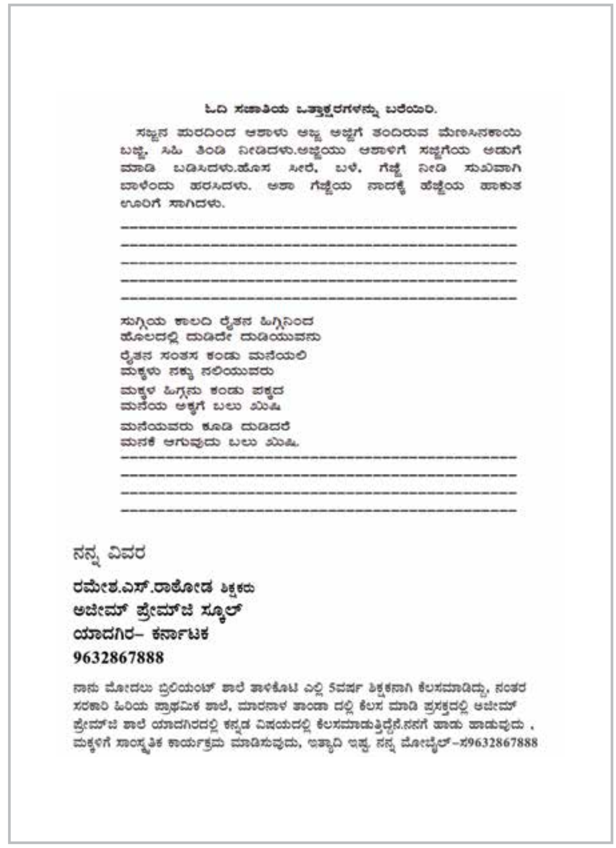

ಓದಿ ಸಜಾತಿಯ ಒತ್ತಾಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಬರೆಯಿರಿ.

ಸಜ್ಜನ ಪುರದಿಂದ ಆಶಾಳು ಅಜ್ಜ ಅಜ್ಜಿಗೆ ತಂದಿರುವ ಮೋಸಿನಕಾಯಿ ಬಜ್ಜಿ. ಸಿಹಿ ತಿಂಡಿ ನೀಡಿದಳು.ಅಜ್ಜಿಯು ಆಶಾಳಿಗೆ ಸಜ್ಜೆಗೆಯ ಅಡುಗೆ ಮಾಡಿ ಬಡಿಸಿದಳು.ಹೊಸ ಸೀರೆ, ಬಳೆ, ಗೆಜ್ಜೆ ನೀಡಿ ಸುಖವಾಗಿ ಬಾಳೆಂದು ಹರಸಿದಳು. ಆಶಾ ಗೆಜ್ಜೆಯ ನಾದಕ್ಕೆ ಹೆಜ್ಜೆಯ ಹಾಕುತ ಊರಿಗೆ ಸಾಗಿದಳು.

ಸುಗ್ಗಿಯ ಕಾಲದಿ ರೈತನ ಹಿಗ್ಗಿನಿಂದ
ಹೊಲದಲ್ಲಿ ದುಡಿದೇ ದುಡಿಯುವನು
ರೈತನ ಸಂತಸ ಕಂಡು ಮನೆಯಲಿ
ಮಕ್ಕಳು ನಕ್ಕು ನಲಿಯುವರು
ಮಕ್ಕಳ ಹಿಗ್ಗನು ಕಂಡು ಪಕ್ಕದ
ಮನೆಯ ಅಕ್ಕಗೆ ಬಲು ಖುಷಿ
ಮನೆಯವರು ಕೂಡಿ ದುಡಿದರೆ
ಮನಕೆ ಆಗುವುದು ಬಲು ಖುಷಿ.

ನನ್ನ ವಿವರ

ರಮೇಶ.ಎಸ್.ರಾಠೋಡ ಶಿಕ್ಷಕರು
ಅಜೀಮ್ ಪ್ರೇಮ್‌ಜಿ ಸ್ಕೂಲ್
ಯಾದಗಿರ- ಕರ್ನಾಟಕ
9632867888

ನಾನು ಮೋದಲು ಬ್ರಿಲಿಯಂಟ್ ಶಾಲೆ ತಾಳಿಕೊಟಿ ಎಲ್ಲಿ 5ವರ್ಷ ಶಿಕ್ಷಕನಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡಿದ್ದು, ನಂತರ ಸರಕಾರಿ ಹಿರಿಯ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ಶಾಲೆ, ಮಾರನಾಳ ತಾಂಡಾ ದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿ ಪ್ರಸಕ್ತದಲ್ಲಿ ಅಜೀಮ್ ಪ್ರೇಮ್‌ಜಿ ಶಾಲೆ ಯಾದಗಿರದಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದೆನೆ.ನನಗೆ ಹಾಡು ಹಾಡುವುದು , ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ ಮಾಡಿಸುವುದು, ಇತ್ಯಾದಿ ಇಷ್ಟ. ನನ್ನ ಮೋಬೈಲ್-ನ9632867888

रमेश एस.राठौड़ अज़ीम प्रेमजी स्कूल, यादगीर, कर्नाटक में कन्नड़ भाषा के शिक्षक हैं। इसके पहले उन्होंने मरनाल तण्डा के सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय और तालिकोटे के ब्रिलियंट स्कूल में अध्यापन कार्य किया। वे गायन और बच्चों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए तैयार करने में रुचि रखते हैं। उनसे ramesh.rathod@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल